दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक विचारों की कोविड-19 के सन्दर्भ नें प्रांसगिकता का अध्ययन

डॉ. सत्येन्द्र
एसोसिएट प्रोफेसर
समाजशास्त्र और सामाजिक कार्य
वनस्थली विद्यापीठ
राजस्थान, भारत

डॉ. सुदेश कुमार
समाजशास्त्र और सामाजिक कार्य
वनस्थली विद्यापीठ
राजस्थान, भारत

सारांश

वर्तमान दौर में विश्व महामारी से गुजा रहा है जिसे "कोविड-19" के नाम से जाना जा रहा है। चीन के 'बुआन' शहर से इसकी शुरूआत हुई और बहुत त्रीवता से इसने सम्पूर्ण विश्व को अपनी जकड़ में कस लिया।

इस दौर में विश्व इतने खौकनाक दौर से गुजरा की "लाशों की मंजर" देखा, वही सामाजिक ताना-बाना और आर्थिक रूप से विश्व हाशिये पर आ गया। इसके कारण दुनिया के प्रत्येक देश ने "लॉकडाउन" करना पड़ा। इससे सामाजिक-आर्थिक रूप से देश, समाज, परिवार प्रभावित हुए।

प्रस्तुत शोध पत्र में आर्थिक प्रभाव का अध्ययन भारत के सन्दर्भ में किया गया है। जिसमें भारत के द्वारा 'लॉकडाउन' के आर्थिक रूप से उभरने के लिए महान विचारक "दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक विचारों की प्रासंगिकता का अध्ययन" किया गया है।

मुख्य शब्द - दीनदयाल, कोविड-19, आर्थिक विचार, आत्म निर्भरता।

दीनदयाल उपाध्याय एडम स्थित व कार्ल माक्र्स की तरह आर्थिक विचारक नहीं थे। उनके द्वारा दिये गये भाषण, लिखी गई पुस्तक तथा पत्र-पत्रिकाओं में छपे लेखों के माध्यम से विश्लेषण पर ऐसा प्रस्तुत किया जाता हैं। जैसा कि भारत के महान नेता महात्मा गाँधी के विचारों को संगृहित किया गया है। दीनदयाल उपाध्याय ने भी गाँधी की तरह समाज की स्थिति के अनुरूप आर्थिक चिन्तन प्रस्तुत किया। दीनदयाल उपाध्याय द्वारा रचित रचना 'टैक्स या लूट' (1954), 'दो योजनाएँः वादें, अनुपालन, आसार' (1958) 'अवमूल्यनः एक बड़ा पतन' (1966) में उनका चिंतन दर्शन प्राप्त होता है।

दीनदयाल के आर्थिक चिंतन को भारत ने वैश्विक महामारी में भारत ने इस आर्थिक स्थिति में अपनाया है जिसका सरकार के द्वारा "आत्म निर्भरता मॉडल" का नामकरण किया गया है। तथा 'कोविड-19' के सन्दर्भ में अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र हेतु शोधार्थी व द्वितीय स्त्रोतों पर आधारित है जिसके लिए दीनदयाल द्वारा रचित पुस्तकों, पत्रिकाओं, लेख इत्यादि से तथ्यों का संग्रह किया गया हैं। इसके साथ-साथ समाचार पत्रों, न्यूज समाचार चैनल इत्यादि के माध्यम से देश के द्वारा अपनाये गए मॉडल को दिखाने से सम्बन्धित तथ्यों का संग्रह किया गया है, जिसके माध्यम से दीनदयाल उपाध्याल के आर्थिक विचारों की प्रांसगिकता का प्रस्तुत शोध पत्र मंे अध्ययन किया है।

सारणी संख्या-1 बेकारी को दूर करना

दीनदयाल उपाध्याय के विचार	कोविड-19 के विचार में समानता
"भारत में 70 प्रतिशत जनसंख्या गाँव में निवास करती हैं। ग्रामोउद्योग एवं कुटीरउद्योग/ लघुउद्योग स्थापित करना है। जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बरकारार रख जा सकें।"	कोविड-19 के कारण अनेक श्रमिक जो ग्राम से शहर में मजदूरी कर पालन करते थे वे कोविड-19 के कारण उद्योग/कार्य बन्द हो गए, जिससे श्रमिक बेरोजगार हो गए।

स्त्रोतः दी. क. स. ंज: 2ः 130-131)

उपर्युक्त सारणी को विश्लेषित करने से स्पष्ट होता है कि दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक दर्शन में गाँधी के प्रभाव को भी देखा जा सकता हैं। दीनदयाल ग्रोमोउद्योग के प्रणल समर्थक थे जिससे प्रत्येक व्यक्ति को कार्य मिले। वे "सबको कार्य ही भारतीय अर्थनीति का मूलाधार मानते हैं। "कुटीर उद्योग" बेरोजगारी के निदान में अहम भूमिका निभा रहे हैं।

सारणी संख्या-2 क्रम शक्ति को बढ़ाना

दीनदयाल उपाध्याय के विचार	'कोविड-19' में प्रांसगिकता

क्रमशक्ति को बढ़ाने के लिए औद्योगीकरण मॉडल अपनाया जाना चाहिए। इसके लिए कुटीर एवं ग्रामोउद्योग को आधार बनाकर बड़े उद्योगों को उनके साथ सामंजस्य किया जाए। जिससे क्रम को बढ़ाया जा सके।	'कोविड-19' में स्पेशल पैकज के अन्तर्गत इस प्रकार की व्यवस्था की गई कि "उघोगों" को विशेष पैकज दिया गया जिससे वो कुटीर/ग्रामोउद्योग के साथ समन्वय किया जाए। ज्यादा से ज्यादा रोजगार के अवसर प्रदान किये जाए। जिससे क्रम शक्ति को भी बढ़ाया जा सके।

स्रोत - वित्त मन्त्री के भाषण का अंश।

दीनदयाल उपाध्याय प्रबल समर्थक रहे हंै। कुटीर एवं ग्रोमोउद्योग के, वे हमेशा औद्योगिकरण के मॉडल में कुटीर एवं ग्रामोउत्थान उद्योगों को प्राथकमकता इसलिए भी देते थे जिससे कच्चा माल बड़े उद्योगों को कुटीर उद्योग से प्राप्त हो सके और क्रम को बढ़ाया जा सके। दीनदयाल उपाध्याय दो योजनाएँः वादे, अनुपालन, आसार में ऐसा वर्णित करते हैं। वर्तमान में विश्व जैसा की विशिष्ट है कि "कोविड-19" से झूम रहा है। इस समय पर भारत ने दीनदयाल उपाध्याय के औद्योगिकरण के मॉडल को अपनाया। वित्त मंत्री और स्वयं प्रधानमंत्री के द्वारा उद्योगों को विशेष राहत पैकेज में कुटीर उद्योगों के साथ समन्वय करके क्रम को बढ़ाया जा सकता है। जिसे नाव भी दिया गया "लोकल कार वॉकल"।

सारणी संख्या-3 औद्योगिक शिक्षा

दीनदयाल उपाध्याय के विचार	'कोविड-19' में
अक्षर और साहित्य ज्ञान के साथ-साथ यह भी आवश्यक है	'नेकल फॉर लोकल' के अन्त्रगत भारतीयों के द्वारा

कि विद्यार्थी को किसी न किसी रूप में शिक्षा दी जाए। हे क्निकल, और वोकेशमल शिक्षा केन्द्रों को ज्यादा सेे ज्यादा स्थापित किया जाए।	तैयार माल को राष्ट्रीय स्तर एवं अन्तराष्ट्रीय स्तर पर उनकों प्रसार एवं प्रचार किया जाए। जिससे ज्यादा स्थानीय लोगों को रोजगार प्रदान किया जा सके।

स्रोत -प्रधानमंत्री (Speech)/द. द. उ. स. ग. 132-183 17 अगस्त. 2020

उपर्युक्त सारणी को विश्लेषित करने से स्पष्ट होता है कि दीनदयाल उपाध्याय भारत की स्वतन्त्रता से ही इस प्रकार के कार्य के पक्षधर थे जिससे शिक्षा रोजगार उन्मूखी हो सके। इसलिए वो वोकेशनल शिक्षा के पर बल देते है। जिससे प्रत्येक बालक शिक्षा ग्रहण करते ही रोजगार को ग्रहण कर सके। हालांकि मोदी सरकार के द्वारा "दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना" की भी शुरूआत की थी। जिससे दीनदयाल उपाध्याय के दूरदर्शिता तो साबित हो ही रही है, बल्कि 2020 ने वैश्विक महामारी में भी दीनदयाल उपाध्याय के विचारों को अपनाते हुए ज्यादा से ज्यादा औद्योणिक सरंचानों को वोकेशनल ट्रेनिंग 'लोकल फॉर वोकल' को स्थापित किया गया।

अतः उपर्युक्त सारणी से यह कहा जा सकता है कि

सारणी संख्या-04 दूतावासों ने केवल स्वदेशी मॉडल

दीनदयाल उपाध्याय के विचार	'कोविड-19' में प्रांसगिकता
दीनदयाल के विचार थे कि दूताहासों में विशेष रूप से भारतीय उच्या आयुक्त में कुटीर उद्योग द्वारा निर्मित	भारतहीन प्रधानमन्त्री ने इस आपदा के दौरान वैय्ाविक स्तर पर भारतीयों के दृष्टा निर्मित पदार्थों, द्रवाएँ एवं दैनिक

वस्तुओं/वसगंे का उपयोग करें जिसे भारतीय संस्कृति, सभ्यता तथा आर्थिक रूप से प्रचार, प्रसार एवं मजबूरी मिले।	वस्तुओं को विश्व बाजार प्रदान किया जाए। जिसे "लोकल फॉर लोकल" का नाम दिया गया।

स्रोत - दीन दयाल संसार, पोटिल

प. दीनदयाल उपाध्याय के विचार अत्यन्त दूरगामी थे, चूंकि प्रत्येक राष्ट्र में राजदूत की नियुक्ति की जाती है, जो सम्बन्धित राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करता है, यदि भारतीय राजदूत भारतीयों द्वारा बनी वेश-भूषा ग्रहण करते हैं तो वहाँ निवास करने वाले भारतीयों पर 'विशेष' रूप से इसका प्रभाव पड़ेगा। जिसके कारण कुटीर उद्योगों को नया जीवनदान मिलेगा।

अतः यह कहा जा सकता है कि दीनदयाल उपाध्याय के स्वदेशी मॉडल के कारण देश आत्म निर्भरता ओर की तरफ जाएगा।

वर्तमान में इनके विचारों का भारत सरकार ने अपनाते हुए "आत्म निर्भरता" की ओर ले जाने पर जोर दिया है।

सारणी संख्या-05 हर हाथ को काम

दीनदयाल उपाध्याय के विचार	'कोविड-19' में प्रांसगिकता
दीनदयाल उपाध्याल के विचार थे कि सबको काम हो भारतीय अर्थनीति का एकमेव मूलाधार है। अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति को काम दिया जाए।	वर्तमान में केन्द्रीय लिए मंत्री के द्वारा उद्योगों 'विशेष राह पैकज' दिया गया है, जिसमें वर्णित किया गया है कि प्रत्येक श्रमिक जो कोविड में बेरोजगार हो गया है, को कार्य पर लगाया जाए।

	जिससे प्रत्येक व्यक्ति को कार्य मिल सके।

स्रोत - वित्त मंत्री के भाषण का अंश, अप्रैल 2020

उपर्युक्त सारणी के विश्लेषण से स्पष्ट होता है, कि दीनदयाल उपाध्याय प्रत्येक व्यक्ति को रोजगार मिले इसके पक्षधर थे, इसलिए वो हमेशा "हर हाथ को काम" के उनके आर्थिक विचारों का अहम् भाग था।

वर्तमान में "कोविड-19" के कारण श्रमिकों को प्रवसन ;डपहपतंजपवदद्ध करना पड़ा, इसलिए भारत सरकार ने ऐसे श्रमिकों को रोजगार में प्राथमिकता के लिए विशेष 'राहत पैकज' की घोषणा की हैं।

अतः यह कहा जा सकता है कि दीनदयाल उपाध्याय के विचार वर्तमान में विशेष रूप से 'कोविड-19' के दौर में अति महत्वपूर्ण प्रासंगिकता हैं।

सारणी संख्या-06 छोटे कारखानों को बढ़ावा

दीनदयाल उपाध्याय के विचार	'कोविड-19' में प्रांसगिकता
दीनदयाल उपाध्याय हमेशा वृहत् उद्योगों के विरोधी थे तथा कुटीर उद्योगों के समर्थक। जिसमें व्यक्ति अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति कुटीर उद्योगों के माध्यम से होने चाहिए। जिससें अर्थव्यवस्था सृदृढ़ हो तथा देश आत्म निर्भर बन सके।	भारतीय प्रधानमंत्री ने "कोविड-19" के बाद देश को आत्म निर्भरित बनाने पर जोर दिया है, इसके लिए स्पेशल पैकज की घोषणा भी की गई हैं। जिससे भारत को आत्म निर्भर बनाया जा सके और विशेष रूप से मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सके।

स्रोत - वित्त मंत्री के भाषण का अंश, अप्रैल 2020

उपर्युक्त सारणी को विशलेषित करने से स्पष्ट होता है कि दीनदयाल उपाध्याय भारतीय जनमानस के आर्थिक स्थिति को लेकर बहुत चिंतित थे। उन्होंने अपने आर्थिक चिन्तन में प्रत्येक भारतीय न को अपनी जरूरतों को पूर्ण करने के लिए "कुटीर उद्योग" को बढ़ावा दिया।

"कोविड-19" सम्पूर्ण विश्व के समबन्धों को प्रभावित किया है, जिसके के कारण राष्ट्रों की दूसरों पर निर्भरता को तहजीज न देकर आत्म निर्भरता को बढ़ावा दिया गया हैं। इसलिए भारत के प्रधानमन्त्री ने कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देते हुए 'मास्क एवं सैनेटाइजर' बनाने हेतु प्रोत्साहित किया गया।

अतः यह कहा जा सकता है कि दीनदयाल उपाध्याय के विचार वर्तमान में प्रांसगिकता हैं।

दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक विचारों का विश्लेषण

प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से दीनदयाल उपाध्याय का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध में सारणियों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि दीनदयाल उपाध्याय कर्मठशील व्यक्ति थे। उनका दर्शन मूलतः गाँधी के दर्शन के करीब और परिस्थिति-जन्य है। गाँधी का दर्शन मूलतः भारतीय रहा है और इसी प्रकार से दीनदयाल दर्शन ग्रामोन्मुखी, बेरोजगारी, तथा जमीनी हकीकत पर बल देता है। इनके दर्शन को पार्टी से बाँधना ठीक नहीं है। दार्शनिक किसी राजनैतिक दल का नहीं होता बल्कि वह राष्ट्र और सम्पूर्ण विश्व का होता है। महात्मा गाँधी और दीनदयाल उपाध्याय मानवतावाती है जिनका मुख्य उद्देश्य मानव केन्द्रित व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का निर्माण करना था।

यहा कहा जा सकता है कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय के कहे हुए शब्द, उनके लेखन कार्य और उनके आर्थिक विचार

'कोविड-19' में सार्थक सिद्ध होते हैं। दीनदयाल उपाध्याय हमेशा रामराज्य के समर्थक रहे, जिसमें सभी प्रजा सुखी रहे, सबके आर्थिक हितों की रक्षा हो।

दीनदयाल के आर्थिक विचारों से यह भी स्पष्ट होता है कि दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के साथ जुड़े रहने पर भी हमेशा इस तथ्य के प्रबल समर्थक थे कि पूंजीपति एवं जमींदारी प्रथा का अन्त हो। वो हमेशा कहते थे कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कार्य राष्ट्र में प्रेम, राष्ट्र उन्नति एवं कत्र्तव्य पालन है। दीनदयाल उपाध्याय हमेशा सम्पत्ति पुनः वितरण के समर्थक रहे हैं।

कुटीर उद्योग में उनकी गहन आस्था थी। गाँधी के दर्शन एवं दीनदयाल के दर्शन में सबसे प्रबल समानता देखने को मिलती है। उनमें ग्रामोत्थान, कुटीर उद्योग रामराज्य रहा है।

अतः यह कहा जा सकता है कि गाँधी की तरह दीनदयाल उपाध्याय भी एक महामानव है जो सही मायने में रामराज्य की स्थापना की ही कल्पना है। जिससे 'कोविड-19' जैसी महामारी में उनके आर्थिक विचारों को अपनाकर संकट से मुक्ति में अहम भूमिका का निर्वाह कर सकते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. *मिश्र, अनिल दत्त (2019), "दीनदयाल उपाध्यायः एक अध्ययन", कन्सेप्ट पब्लिकेशन हाउस कम्पनी, दिल्ली*
2. *शर्मा, महेश चन्द (2015) "एकात्मक मानववाद", प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।*
3. *दैनिक भास्कर - 22.03.2010 से 30.04.2020*
4. *मीडिया रिपोर्ट्स, प्रेस कॉन्फ्रेन्स 22.03.200 से 30.04.2020*